व्यक्तित्व की विमाएँ अथवा निर्धारक/कारक →[Factors]
(Dimensions or Determinants of Personality)

व्यक्तित्व के विकास में मुख्यतया दो प्रकार के तत्त्वों का प्रभाव पड़ता है एक वंश परम्परागत (Hereditary) का और दूसरा पर्यावरण-जगत् (Environmental) का। प्रश्न यह है कि व्यक्तित्व के विकास में वंशपरम्परा का अधिक प्रभाव पड़ता है या पर्यावरण का। इस सम्बन्ध में वंशपरम्परावादियों की यह धारणा है कि व्यक्तित्व पर वंश-परम्परा का अधिक प्रभाव पड़ता है। जन्म के साथ ही व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को लेकर आता है। दो व्यक्तियों में जो विभिन्नता दिखाई देती है उसका कारण वंश-परम्परा ही है। किसी बालक की वंशपरम्परा के आधार पर ही यह कहा जा सकता है कि उसका विकास किस सीमा तक होगा। इस धारणा के अनुसार यह माना जाता है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व में शिक्षा के द्वारा कोई परिवर्तन नहीं लाया जा सकता। इसके विपरीत पर्यावरणवादियों का कहना है कि व्यक्तित्व के विकास में पर्यावरण का ही विशेष महत्त्व है। व्यवहारवादी **वाटसन (Watson)** ने तो यहाँ तक कहा है कि मनुष्य योग्यता, मेधा, धातु स्वभाव और मानसिक बनावट तथा विशेषताओं को अपनी वंशपरम्परा से प्राप्त नहीं करता अपितु उसके व्यक्तित्व का विकास पूर्ण रूप से पर्यावरण पर ही निर्भर करता है। परन्तु अब इन दोनों ही धारणाओं को अतिशयोक्तिपूर्ण एवं एंकाकी माना गया है और यह स्वीकार किया गया है कि व्यक्तित्व के विकास में वंशपरम्परा और पर्यावरण दोनों का प्रभाव पड़ता है। व्यक्तित्व की नींव वंशपरम्परा द्वारा पड़ती है किन्तु यह नींव व्यक्ति के सामाजिक सम्पर्कों अर्थात् पर्यावरण द्वारा प्रभावित होती है। **क्रो एवं क्रो (Crow & Crow)** के अनुसार—*"व्यक्ति का निर्माण न केवल वंशपरम्परा से और न केवल पर्यावरण से होता है वास्तव में वह जैविकदाय और सामाजिक धरोहर के एकीकरण की उपज है।"*

व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले मुख्य जैविक (Biological) और वातावरणजन्य (Environmental) कारक निम्नलिखित हैं—

जैविक कारक (Biological Determinants)

(1) शरीर रचना (Physique)—शरीर रचना के अन्तर्गत शरीर की लम्बाई और वजन, भिन्न-भिन्न अंगों के अनुपात, मुखाकृति स्वास्थ्य और रंग आदि आते हैं। इन सबको मिलाकर ही किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रभावशाली या प्रभावहीन होता है। व्यक्ति के रूप, रंग, आकार आदि की लोग प्रशंसा अथवा निन्दा करते हैं। इस प्रशंसा अथवा निंदा का प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व पर पड़ता है। जिस व्यक्ति की शरीर रचना बहुत अच्छी है, रंग बहुत साफ है, स्वास्थ्य बड़ा अच्छा है उसको सभी लोगों से प्रशंसा प्राप्त होती है। जिससे उसमें आत्मविश्वास की भावना पैदा होती है, जो व्यक्तित्व का मुख्य गुण माना गया है। इसके विपरीत जो व्यक्ति अधिक लम्बे अथवा ठिगने कद के होते हैं मोटे या बहुत पतले होते हैं, उनको

Scanned with CamScanner

समाज में सम्मान और यश प्राप्त नहीं होता। सभी लोग उनकी कमी की ओर संकेत करते हैं। उनकी हँसी उड़ाई जाती है जिसके फलस्वरूप वे सामाजिक सम्बन्ध नहीं रखते, खेलों में भाग नहीं लेते और दब्बू सुस्त, डरपोक बन जाते हैं। उनमें ही हीनता की भावना (Feeling of Inferiority) पैदा हो जाती है। इस संवेगात्मक अस्थिरता के कारण उनका व्यक्तित्व एक अलग प्रकार से विकसित होता है। इस प्रकार व्यक्तित्व के विकास में शरीर रचना का विशेष प्रभाव पड़ता है। **मैक्डूगल** (McDougle) के शब्दों में, *"हमें उन विशिष्टताओं के अप्रत्यक्ष प्रभावों को निश्चित रूप से स्वीकार करना पड़ेगा जो मुख्य रूप से शारीरिक हैं।"*

(2) अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ (Endocrine Glands)—अन्तःस्रावी ग्रन्थियों से एक प्रकार का स्राव निकलता है जिसे हॉर्मोन (Hormone) कहते हैं। ये ग्रन्थियाँ अपने स्राव को सीधे रूप से रक्त मे मिश्रित कर देती है। जब अन्तः स्रावी ग्रन्थियों से निकला हुआ हॉर्मोन समुचित मात्रा में रक्त की धारा में मिलता है तब व्यक्तित्व के विकास पर भारी प्रभाव पड़ता है और व्यक्तित्व के विभिन्न अंगों, शरीर रचना (Physique) धातु स्वभाव (Temperament), बुद्धि (Intelligence) और चेहरे में परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगते हैं। इन सभी परिवर्तनों का प्रभाव व्यक्ति के व्यवहार और उसकी मनोवृत्तियों पर पड़ता है निम्नलिखित अन्तः-स्रावी ग्रन्थियों का व्यक्तित्व को प्रभावित करने में मुख्य स्थान है—

(अ) थायरॉइड ग्रन्थियाँ (Thyroid Glands)
(ब) एड्रिनल ग्रन्थि (Adrenal Gland)
(स) पिट्यूटरी ग्रन्थि (Pitutary Gland)
(द) पैंक्रियाज (Pancreas)
(य) गोनाइड्स (Gonads)

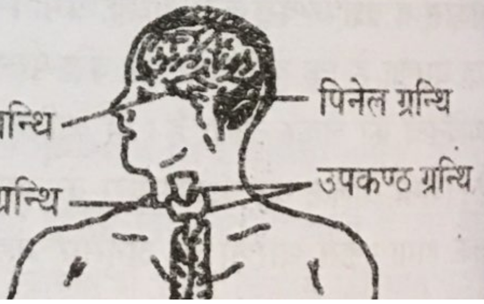

(3) **स्नायुमण्डल** (Nervous System)—व्यक्तित्व के जैविक निर्धारकों में स्नायुमण्डल का स्थान प्रमुख मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि जिन व्यक्तियों का स्नायुमण्डल अधिक विकसित तथा जटिल होता है, की बुद्धि अधिक होती है ओर उनमें समायोजन करने की क्षमता भी अधिक होती है। उनमें सांवेगिक ता, आत्म-विश्वास और उत्तरदायित्व जैसे गुण पाए जाते हैं। इसके विपरीत, यदि व्यक्ति का स्नायुमण्डल विकसित होता है, तो व्यक्ति कम बुद्धि का होता है और उसमें समायोजन की क्षमता भी कम होती ऐसे व्यक्तियों में असामाजिक गुण विकसित हो जाते हैं और उनका चरित्र विकृत हो जाता है।

(4) **शरीर रसायन** (Body Chemistry)—आदि काल से ही मानव स्वभाव का कारण उसके शरीर रासायनिक तत्त्वों को माना गया है। यह माना जाता है कि शान्त व्यक्ति में कफ की, चिड़चिड़े व्यक्ति पित्त की, विषादी व्यक्ति में तिल्ली की और वात प्रकृति के व्यक्ति में रुधिर की अधिकता होती है। पि इस शरीरशास्त्रीय सिद्धान्त को मनोविज्ञान में स्वीकार नहीं किया जाता किन्तु फिर भी इस बात से भी मनोवैज्ञानिक सहमत है कि शरीर के रासायनिक तत्त्वों का व्यक्तित्व से गहरा सम्बन्ध है। शरीर के सायनिक तत्त्व दो प्रकार के होते हैं, कुछ शरीर में ही बनते हैं। और कुछ बाहर से शरीर से पहुँचते है। का प्रभाव व्यक्तित्व पर स्पष्ट दिखाई पड़ता है। रक्त में शर्करा की मात्रा कम या अधिक हो जाने से क्ति की शारीरिक और मानसिक दशा में परिवर्तन हो जाता है। विभिन्न विटामिनों की कमी के कारण क्ति में अनेक परिवर्तन दिखाई देते हैं।

(5) **बुद्धि एवं मेधा** (Intelligence and Talents)—पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बुद्धि जन्मजात ती है। यह भी पित्रकों से प्राप्त होती है। इसलिये यह भी जैविक कारकों में आती है। व्यक्तित्व के कास में बुद्धि का विशेष महत्त्व है। सामान्य बुद्धि का व्यक्ति सरलता से समाज में अपना समायोजन रने में समर्थ हो जाता है लेकिन कम बुद्धि वाले व्यक्ति को कठिनाई का सामना करना पड़ता है। उसमें नता की भावना उत्पन्न हो जाती है और संवेगात्मक अस्थिरता पैदा हो जाती है। संगीत, गणित आदि के मेधावी व्यक्ति के व्यक्तित्व को बहुत प्रभावित करते हैं। जिस व्यक्ति में संगीत की मेधा है वही व्यक्ति ष्ठ संगीतज्ञ बन सकता है।

Scanned with CamScanner

पर्यावरणजन्य (Environmental Determinants)

(1) परिवार का प्रभाव (Influence of Family)—व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारकों मे परिवार का सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान है। वैसे तो जीवन भर परिवार के वातावरण का प्रभाव व्यक्ति के ऊपर पड़ता है परन्तु बाल्यावस्था में यह प्रभाव सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण होता है, क्योंकि यही वह अवस्था है जिसमे व्यक्तित्व के आधारभूत तत्त्वों का निर्धारण होता है। बालक किस परिवार का है? इसका प्रभाव बालक के ऊपर पड़ता है। संयुक्त और विभक्त परिवार के बालकों में अन्तर पाया जाता है। संयुक्त परिवार के बालकों में स्नेह, सहयोग, सहिष्णुता आज्ञापालन आदि गुण जितने प्रखर रूप में पाये जाते हैं, उतने विभक्त परिवार के बालकों में नहीं पाये जाते। माता-पिता का बालक के प्रति व्यवहार उसके विकासमय व्यक्तित्व पर भारी प्रभाव डालता है। यदि माता-पिता बालक से अत्यधिक प्रेम करते हैं, उसके प्रति आवश्यकता से अधिक सहानुभूति दिखाते हैं, उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं, उसे क्या खाना है, क्या पहनना है, कौन-सी पुस्तक पढ़नी है, इसका निर्णय स्वयं करते हैं तो बालकों में आश्रित रहने की भावना पैदा हो जाती है, उनमें स्वावलम्बन नहीं आने पाता और उनकी स्वतन्त्र निर्णय करने की शक्ति समाप्त हो जाती है। **फ्रायड** (Freud) का मत है कि बाल्यावस्था में पिता के ऊपर आश्रित रहने की भावना ही आगामी जीवन में नेता के ऊपर आश्रित रहने की भावना के रूप में परिणीत हो जाती है। इसके विपरीत, यदि माता-पिता बालक के प्रति समुचित प्रेम नहीं दिखाते, उनसे सहानुभूति नहीं रखते, उनको छोटी-छोटी बातों पर डाँटते फटकारते हैं, पीटते हैं, उनके प्रति कठोर व्यवहार करते हैं तो ऐसे बालक अन्तर्मुखी हो जाते हैं, उनमें लाभ और विद्रोह की भावना उत्पन्न हो जाती है, वे दिवास्वप्नों और कल्पनाओं के संसार में विचरण करने लगते हैं और उनमें अपराधवृत्ति पैदा हो जाती है। असामाजिक व्यवहार द्वारा वे अपनी प्रेम की अतृप्त भावना को तृप्त करने का प्रयत्न करते हैं। **हिली** और **ब्रोनर** (Helay & Broner) ने अपने अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि बालक के अपराधी होने का एक प्रमुख कारण पिता का उसके प्रति दुर्व्यवहार है। इस प्रकार माता-पिता का बालकों के प्रति आवश्यकता से अधिक प्रेम या उनकी नितांत अपेक्षा दोनों ही बातें उनके व्यक्तित्व के विकास में बाधक होती हैं।

Scanned with CamScanner

(2) जन्मक्रम (Birth-Order)—परिवार में बालक के जन्मक्रम का भी उसके व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है। परिवार में सब बालकों के साथ समान व्यवहार नहीं किया जाता। इकलौते बच्चे को माता-पिता का अत्यधिक प्यार मिलता है। परिवार में उसके अधिकारों में कोई हस्तक्षेप करने वाला नहीं होता, उसकी इच्छाओं की अधिकाधिक पूर्ति माता-पिता के द्वारा की जाती है अतः वह परावलम्बी हो जाता है और उसको एकाधिपत्य की भावना आ जाती है। यही स्थिति सबसे बड़े बालक की उस समय तक होती है जब तक इकलौता रहता है। दूसरे बालक के उत्पन्न होने पर जब उसका अधिकार छिन जाता है तो उसमें उसके प्रति ईर्ष्या की भावना पैदा हो जाती है और ऐसे बालक कभी-कभी विद्रोही बन जाते हैं। परिवार में सबसे छोटे बालक को सभी से सदैव प्यार और सहानुभूति मिलती है, जिससे वह परावलम्बी बन जाता है।

(3) सांस्कृतिक प्रभाव (Cultural Influence)—व्यक्तित्व पर पड़ने वाले सामाजिक प्रभावों में संस्कृति का प्रभाव सबसे अधिक होता है। **बोरिंग और लैंगफील्ड** (Boring & Langfild) के शब्दों में, *"जिस संस्कृति में व्यक्ति का लालन-पालन होता है, उसका उसके व्यक्तित्व के लक्षणों पर व्यापक प्रभाव पड़ता है।"* संस्कृति के अनुरूप ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का स्वरूप निश्चित होता है। विभिन्न जातियों के रीति-रिवाजों, परम्पराओं, नैतिक आदर्शों, मूल्यों, कला, साहित्य, भाषा धर्म और दैनिक कार्य-कलापों में जो अन्तर दृष्टिगोचर होता है, वह संस्कृति के कारण ही है। भारतीय धार्मिक मूल्यों को सर्वोच्च मानते हैं जबकि पाश्चात्य लोगों के लिये भौतिक मूल्य सर्वोच्च है। भारतीय समाज में भी हिन्दुओं और जनजातीय समाजों में भारी अन्तर पाया जाता है, जो व्यक्ति जितने अधिक नरमुण्ड काटकर लाता है, नागाओं में उसका उतना ही अधिक आदर होता है जबकि हिन्दुओं में हत्या को पाप समझा जाता है। हिन्दुओं में यौन आचरण पर भारी प्रतिबन्ध लगे हुये हैं जबकि जोनसार बावर के आदिवासियों में ऐसा नहीं है, हिन्दुओं और जनजातीय समाजों के व्यक्तियों में इसी कारण बहुत अन्तर दिखाई देता है।

(4) विद्यालय का प्रभाव (Influence of School)—परिवार के बाद विद्यालय ही वह महत्त्वपूर्ण कारक है जो बालक के व्यक्तित्व पर भारी प्रभाव डालता है। बालक अपने प्रारम्भिक चार-पाँच वर्षों को परिवार में व्यतीत करने के बाद विद्यालय में आता है। उसकी बाल्यावस्था और किशोरावस्था का महत्त्वपूर्ण समय विद्यालय में ही व्यतीत होता है। अतः विद्यालय अपनी विभिन्न अंगों और विविध क्रियाओं द्वारा बालक के विकासोन्मुख व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। जिन विद्यालयों का वातावरण शैक्षिक है, जिनकी व्यवस्था उत्तम हैं, जहाँ का पुस्तकालय, वाचनालय और प्रयोगशालाएँ सुसज्जित हैं, जहाँ प्रजातंत्रवाद की भावना है, जहाँ का अनुशासन उत्तम है, जहाँ अच्छा क्रीडास्थल है और जहाँ पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं की उपयोगी व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त यदि पाठ्यक्रम उपयोगी नहीं है, पाठन विधि अनुपयुक्त है, परीक्षा प्रणाली दोषपूर्ण है और विद्यालय का वातावरण दोषपूर्ण है तो यह सम्भव है कि बालक के व्यक्तित्व पर बुरा प्रभाव पड़े। इस बात से सभी सहमत है कि हमारी दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली बालकों में अस्वस्थ प्रतियोगिता को प्रोत्साहित करती है, उनमें असंतोष और क्षोभ पैदा करती है, उनमें संवेगात्मक असंतुलन पैदा करती है जिससे उनका व्यक्तित्व कुंठित, विकृत और असंतुलित हो जाता है।

Scanned with CamScanner